

डैनियल की पुस्तक - संख्या एक सौ सतहत्तर

144,000 की मुहरबंदी: दानिय्येल के दर्शन और भविष्यवाणी-संबंधी प्रतीकवाद से प्राप्त अंतर्दृष्टियाँ

Jeff Pippenger
2024-04-07

दसवें अध्याय में दानिय्येल को तीन बार स्पर्श किया गया; पहली और अंतिम बार गेब्रियल ने, और बीच का स्पर्श मसीह का था। उसी मध्य स्पर्श में दानिय्येल ने अपनी भ्रष्टता को सबसे गहराई से महसूस किया, क्योंकि सत्य का मध्य मार्गचिह्न विद्रोह का प्रतिनिधित्व करता है। दानिय्येल को दूसरी बार मीकाएल ने ही स्पर्श किया, क्योंकि इक्कीस दिनों के अंत में वही उतर आया था।

प्रतीकात्मक साढ़े तीन दिनों के अंत में, जिनमें प्रकाशितवाक्य अध्याय ग्यारह के दो गवाह सड़क पर मरे पड़े रहते हैं, एक वाणी उन दो गवाहों को पुनर्जीवित करती है। यह प्रधानदूत की वही वाणी है जो पुनर्जीवित करती है। दानिय्येल अध्याय दस में बाईसवें दिन पर मीकाएल का अवतरण, 2023 में उन दो गवाहों के पुनरुत्थान के साथ मेल खाता है। जब वे दो गवाह सड़क पर मरे पड़े थे, तब यहजेकेल को उनकी बिखरी हुई हड्डियाँ दिखाई गईं, और उससे पूछा गया कि क्या वह समझता है कि तराई में पड़ी वे मृत सूखी हड्डियाँ पुनर्जीवित की जा सकती हैं; और यहजेकेल का उत्तर केवल इतना था, "हे प्रभु, तू ही जानता है।"

तब यहजेकेल से हड्डियों के विषय में भविष्यवाणी करने को कहा गया, और उसने ऐसा ही किया; और जब उसने ऐसा किया, तब वे आपस में जुड़कर संगठित हो गईं, परन्तु अब भी जीवित न हुईं। यहजेकेल की पहली भविष्यवाणी हड्डियों को एक साथ इकट्ठा करने की थी, परन्तु उन हड्डियों को एक सेना के रूप में पुनर्जीवित करने के लिए दूसरी भविष्यवाणी आवश्यक थी। यहजेकेल की दूसरी भविष्यवाणी तीसरे हाथ की भविष्यवाणी थी, जिसका प्रतीक वे चार पवन थे जिन्होंने उन हड्डियों में जीवन उत्पन्न किया। पहला आदम सिद्ध रूप में सृजा गया था, परन्तु बाद में उसने पाप किया और मृत्यु को अपनी सारी सन्तान पर पहुँचा दिया। यहजेकेल की मृत हड्डियों का पुनरुत्थान आदम की उसकी सिद्धता में सृष्टि के समानान्तर है, क्योंकि आदम पहले रचा गया, और फिर प्रभु ने उसके नथनों में जीवन का श्वास फूँका।

यह कहने का आशय नहीं है कि जब दो गवाह फिर से जीवित किए जाते हैं तो वे महिमामय देह प्राप्त कर लेते हैं, क्योंकि ऐसा दूसरे आगमन तक नहीं होता; परंतु उनका पुनरुत्थान दानिय्येल के कारणकारी "मराह" दर्शन से मेल खाता है, जब वे उस स्वरूप में बदल दिए जाते हैं जिसे वे तब देखते हैं। पंक्ति पर पंक्ति, मुहरबंदी की प्रक्रिया भविष्यवाणी की गवाही द्वारा बहुत सावधानी से प्रस्तुत की गई है।

प्रकाशितवाक्य के ग्यारहवें अध्याय में, "साढ़े तीन दिन बाद परमेश्वर की ओर से जीवन की आत्मा प्रवेश कर गई" उन दोनों गवाहों में, "और वे" तब "अपने पैरों पर खड़े हो गए; और जो उन्हें देखते थे, उन पर बड़ा भय छा गया," और तब "स्वर्ग से एक बड़ी आवाज उनसे कहती हुई आई, इधर ऊपर आओ। और वे बादल में स्वर्ग पर चढ़ गए; और उनके शत्रुओं ने उन्हें देखा।"

पहले आत्मा उनमें प्रवेश कर गई, तब वे अपने पैरों पर खड़े हो गए, और जब वे खड़े हुए, तो उनके शत्रुओं पर भय छा गया, जो पहले उनकी मृत्यु पर आनंद मना चुके थे। तब एक आवाज़ उन्हें ऊपर बुलाती है, और उनके शत्रु इस घटना को देखते हैं। यहजेकेल में, पहले उनकी पहचान घाटी में बिखरे और मृत के रूप में की जाती है, फिर एक भविष्यवाणी घोषित की जाती है जो उन्हें एकत्र करती है, फिर दूसरी भविष्यवाणी उन्हें एक शक्तिशाली सेना के रूप में खड़ा कर देती है। दानिय्येल में, वह पहले महान दर्शन देखता है जो दो वर्गों में विभाजन उत्पन्न करता है, और तब उसे तीन बार स्पर्श किया जाता है।

पहली बार जब उसे छुआ गया, उसमें कोई शक्ति शेष नहीं थी; वह गहरी नींद में था, और उसका चेहरा जमीन की ओर था। नींद मृत्यु का प्रतीक है। फिर भी उसने कहे गए शब्द सुने।

इस पर आश्चर्य मत करो; क्योंकि वह समय आ रहा है जब कब्रों में जो हैं, वे सब उसकी वाणी सुनेंगे। यूहन्ना 5:28

तब गैब्रिएल ने दानिएल को हाथों और घुटनों के बल ला दिया, और फिर उसे खड़े होने की आज्ञा दी; वह खड़ा भी हो गया, यद्यपि वह कांप रहा था। तब उसने गैब्रिएल के वचन सुने, पर उसकी वाणी बंद हो गई। इज़ेकिएल ने भी मसीह का दर्शन देखा था, और उससे भी इसी प्रकार की घटनाओं का क्रम घटित हुआ।

और उनके सिरों के ऊपर जो आकाशमंडल था, उसके ऊपर एक सिंहासन के-सा स्वरूप था, जो नीलम पत्थर के समान दिखाई देता था; और उस सिंहासन के स्वरूप पर ऊपर की ओर एक मनुष्य के-सा रूप दिखाई देता था। और मैंने देखा कि उसकी कटि से ऊपर तक उसके भीतर चारों ओर आग जैसा, पीताभ रंग-सा स्वरूप था; और उसकी कटि से नीचे तक भी मुझे मानो आग का-सा रूप दिखाई देता था, और उसके चारों ओर चमक थी। जैसे वर्षा के दिन बादल में जो धनुष दिखाई देता है, वैसा ही चारों ओर की उस चमक का रूप था। यह प्रभु की महिमा की समानता का दर्शन था। और जब मैंने उसे देखा, तो मैं मुंह के बल गिर पड़ा, और मैंने किसी के बोलने की वाणी सुनी। और उसने मुझसे कहा, हे मनुष्य-पुत्र, अपने पांवों पर खड़ा हो, और मैं तुझ से बात करूंगा। और जब वह मुझसे बोल रहा था, तब आत्मा मुझ में प्रवेश कर गई, और उसने मुझे मेरे पांवों पर खड़ा कर दिया, तब मैंने उसके वचन सुने जो मुझसे बोल रहा था। यहजेकेल 1:26-2:2.

उस दर्शन ने यहजेकेल और दानिय्येल दोनों को धूल में दीन कर दिया, जहाँ वे भूमि पर मुँह के बल गिर पड़े। उसी अवस्था में भी दोनों ने प्रभु का वचन सुना। उनसे जो वचन कहा गया उसे सुनने के लिए दोनों को खड़ा किया गया, और जब उन्होंने वे वचन सुने, तो 'आत्मा उनमें प्रवेश कर गई'। दैवीयता का संयोग पवित्र आत्मा द्वारा पहुँचाए गए परमेश्वर के वचन को ग्रहण करने से पूरा होता है। 'वचन' ही वह है जो दैवीयता को मानवता में संप्रेषित करता है। गैब्रियल द्वारा दानिय्येल को अध्याय ग्यारह में दी गई भविष्यसूचक इतिहास की गंभीरता और महत्त्व को समझने के लिए इस सत्य को पहचानना आवश्यक है। अध्याय ग्यारह में प्रस्तुत भविष्यसूचक इतिहास वह माध्यम है जिसके द्वारा पवित्र तेल बुद्धिमान कुँवारियों तक पहुँचाया जाता है।

यहेज़केल के संदर्भ में, उसे तुरंत यह निर्देश दिया जाता है कि उसे लाओदिकियाई एडवेंटिज़्म को एक संदेश देना है, हालांकि शुरुआत से ही यहजेकेल को यह बताया जाता है कि लाओदिकियाई एडवेंटिज़्म उसके वचन नहीं सुनेगा, क्योंकि वे एक विद्रोही घराना हैं। यहजेकेल का अनुभव यशायाह की पुस्तक के अध्याय छह का ही अनुभव है, और इसलिए दो साक्षियों की गवाही पर, जब परमेश्वर दानिय्येल को नींद से जगाता है, जो मृत्यु का प्रतीक है, तो दानिय्येल को लाओदिकियाई एडवेंटिज़्म के उस विद्रोही घराने के लिए एक संदेश दिया जाता है, पर वे नहीं सुनेंगे।

तब दानिएल को दूसरी बार स्वयं मसीह ने छुआ; उन्होंने दानिएल के होंठों को छुआ, जैसे उन्होंने वेदी से लिए एक अंगारे से यशायाह के होंठ छुए थे। तब दानिएल बोल सका, पर वह अभी भी निर्बल था और उसमें अब तक श्वास नहीं थी। यहजेकेल के अनुसार, श्वास "चार पवनों" के संदेश के साथ आती है, जो यहजेकेल की दूसरी भविष्यवाणी थी। "चार पवनों" के विषय में यहजेकेल की भविष्यवाणी दानिएल के तीसरे स्पर्श से मेल खाती है, क्योंकि उसी समय श्वास हड्डियों में प्रवेश करती है और वे एक पराक्रमी सेना की तरह खड़ी हो जाती हैं। दानिएल के तीसरे स्पर्श में ही वह सामर्थ्य पाता है।

18 जुलाई, 2020 को, परमेश्वर की अंतिम-काल की प्रजा बिखेर दी गई और दृष्टान्त के प्रतीक्षा-काल में प्रवेश कर गई। मुहरबंदी का इतिहास 22 अक्टूबर, 1844 से लेकर 1863 के विद्रोह तक के इतिहास में चित्रित किया गया था। वहाँ प्रस्तुत इतिहास की रेखा 11 सितंबर, 2001 से लेकर रविवार के कानून तक की रेखा के साथ ओवरलैप करती है, और यह 18 जुलाई, 2020 से लेकर रविवार के कानून तक के इतिहास के साथ भी ओवरलैप करती है। यह भविष्यसूचक घटना इस तथ्य पर आधारित है कि प्रतीकों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, और उनका अर्थ उस संदर्भ

से निर्धारित किया जाना है जहाँ उन्हें लागू किया जाता है।

जब हम तीनों स्वर्गदूतों में से किसी के आगमन और कार्य पर विचार करते हैं, तो वे घटनाओं के एक ही क्रम से संचालित होते हैं। वे तब आते हैं जब उनसे संबंधित भविष्यवाणी की मुहर खोली जाती है। वह भविष्यवाणी तीन चरणों पर आधारित होती है: उसका आगमन, उसका सशक्तिकरण, और अंत में बंद द्वार। इतिहास में अन्य मील के पत्थर भी हैं, परंतु तीनों स्वर्गदूतों में से किसी के आगमन से जुड़े तीन परीक्षात्मक मील के पत्थरों में पहला वह है जहाँ किसी भविष्यवाणी की मुहर खोली जाती है। जो संदेश मुहर-खुलने पर प्रकट होता है, उसे एक पुष्टि के माध्यम से सशक्त किया जाता है, और वही पुष्टि तथा सशक्तिकरण तब उस इतिहास के पुरुषों और महिलाओं की परीक्षा लेते हैं। इतिहास का निष्कर्ष एक कसौटी उत्पन्न करता है जो यह प्रदर्शित करती है कि तीसरी परीक्षा पर खड़े लोग बुद्धिमान हैं या मूर्ख।

11 सितंबर 2001 से लेकर रविवार के कानून तक के इतिहास में आप तीन स्वर्गदूतों की पहचान कर सकते हैं। पहला 11 सितंबर 2001 को आया, दूसरा 18 जुलाई 2020 को आया, और तीसरा शीघ्र आने वाले रविवार के कानून (लिटमस परीक्षण) पर आता है। 22 अक्टूबर 1844, 11 सितंबर 2001 के साथ मेल खाता है, 1856, 18 जुलाई 2020 के साथ मेल खाता है, और 1863, रविवार के कानून के साथ मेल खाता है। यह कहे जाने पर, 22 अक्टूबर 1844 से 1863 तक का समय भी 18 जुलाई 2020 से लेकर रविवार के कानून तक के काल से मेल खाता है, क्योंकि 18 जुलाई मोहरबंदी के इतिहास के दूसरे स्वर्गदूत का आगमन था। उपर्युक्त इतिहास अब भी किसी भी स्वर्गदूत के केवल मार्गचिह्न के रूप में सही ढंग से पहचाना जाता है।

18 जुलाई, 2020 को एक ऐसी सत्यता का मुहर खोला गया, जो उस पीढ़ी की परीक्षा लेने के लिए थी। उस इतिहास में दूसरा चरण वह है जब दो गवाहों का पुनरुत्थान होता है। तब उनकी यह परीक्षा की जाती है कि क्या वे उस समय प्रकट किए गए प्रकाश को स्वीकार करेंगे, जो अभी हो रहा है। फिर संडे लॉ पर (लिटमस परीक्षण), यह प्रकट हो जाएगा कि कौन बुद्धिमान कुंवारी है और कौन नहीं। जब हम उस इतिहास को केवल एक अकेले स्वर्गदूत की संरचना के रूप में देखते हैं, और फिर 22 अक्टूबर, 1844 से लेकर 1863 के विद्रोह तक के इतिहास को 18 जुलाई, 2020 से संडे लॉ तक के इतिहास पर लागू करते हैं, तब हम पाते हैं कि 1849 में, सिस्टर व्हाइट ने यह पहचाना कि प्रभु ने अपने लोगों के बचे हुएों को इकट्ठा करने के लिए फिर से अपना हाथ बढ़ाया था।

22 अक्टूबर, 1844 से 1849 तक, परमेश्वर के लोग बिखरे हुए थे। 1850 में उन्होंने हबक्कुक की दो पट्टिकाओं में से दूसरी तैयार की। जनवरी 1851 में वे रिव्यू में नए चार्ट का विज्ञापन कर रहे थे। परमेश्वर के लोग बिखरे हुए थे, और तीसरा स्वर्गदूत प्रकाश के साथ आ पहुँचा। तब परमेश्वर ने उन्हें फिर से इकट्ठा करना शुरू किया, और जैसा उसने 1842 में किया था, वैसा ही उसने उस संदेश का एक दृश्य प्रतिनिधित्व प्रदान किया जिसका उन्हें प्रचार करना था। 22 अक्टूबर, 1844 को जो प्रकाश आया वह ज्ञान में वृद्धि था, और वह उसके निर्देशन में विकसित होता रहा, और 1856 में उस प्रकाश का शीर्ष पत्थर प्रस्तुत किया गया। वह प्रकाश "सात समय" पर था, जो पहला प्रकाश था जिसे विलियम मिलर ने पहचाना था, और जिसे उन भविष्यवाणियों में से एक के रूप में प्रस्तुत किया गया था जो 22 अक्टूबर, 1844 को पूरी हुई।

1856 में "सात समय" का प्रकाश, एक ओर पहले स्वर्गदूत के दूत मिलर को दी गई ज्ञान-वृद्धि का समापन था, और साथ ही 22 अक्टूबर, 1844 को दी गई तीसरे स्वर्गदूत की अंतिम ज्योति भी था। 1856 में उस प्रकाश का अस्वीकार, 1798 में जिसकी मुहर खोली गई थी उस ज्ञान-वृद्धि के साथ-साथ 22 अक्टूबर, 1844 को जिसकी मुहर खोली गई थी उस ज्ञान-वृद्धि का भी अस्वीकार था, और इसे उन्हीं लोगों ने अस्वीकार किया जिन्होंने वहीं और उसी समय फिलाडेल्फिया के अनुभव से लाओदीकिया के अनुभव में संक्रमण किया। 1863 का विद्रोह तीसरा, और कसौटी जैसा, परीक्षण था, जिसे एक नकली चार्ट द्वारा प्रदर्शित किया गया जिसने "सात समय" के प्रकाश को हटा दिया।

19 अप्रैल, 1844 की पहली निराशा, पहले स्वर्गदूत के फिलाडेल्फियाई आंदोलन पर इस कारण आई कि परमेश्वर ने 1843 के अग्रणी चार्ट के कुछ अंकों में हुई गलती पर अपना हाथ रख दिया था। 18 जुलाई, 2020 की पहली निराशा, तीसरे स्वर्गदूत के लाओदीकियाई आंदोलन पर इस कारण आई कि मनुष्यों ने इस बात की अवहेलना की कि 22 अक्टूबर, 1844 को मसीह ने स्वर्ग की ओर अपना हाथ उठाकर शपथ खाई थी कि समय अब और नहीं रहेगा। 18 जुलाई, 2020 को एक संदेश की मुहर खोली गई जो इस पीढ़ी की कुँवारियों की परीक्षा लेने वाला था। 1850 की तरह, प्रभु ने 2023 में दूसरी बार अपना हाथ बढ़ाया, यहजेकेल की मरी हुई हड्डियों को इकट्ठा करने के लिए, जो 18 जुलाई, 2020 से सड़क पर मरी पड़ी थीं। 1851 तक, संदेश का एक नया दृश्य प्रतिरूप था, जो हबक्कूक अध्याय दो की भविष्यवाणी की पूर्ति था, और इस प्रकार यह दर्शाता है कि 2023 के बाद प्रभु के पास एक नया जीवित ध्वज होगा, जिसे वह उठाएगा, जो हबक्कूक की दो पट्टिकाओं द्वारा प्रतीकित है।

हबक्कूक की दो पट्टिकाएँ, दस आज्ञाओं की दो पट्टिकाओं के साथ-साथ पिन्तेकुस्त के पर्व में हिलाई भेंट की दो रोटियों द्वारा प्रतीकित थीं। एक लाख चवालीस हजार को पहिलौठे फल की भेंट के रूप में पहचाना जाता है, और वे वही हैं जिनका उल्लेख मलाकी में है, जो भेंट को “जैसे प्राचीन काल में, जैसे पूर्व वर्षों में” दर्शाते हैं। उन्हें हिलाई भेंट के रूप में ऊँचा उठाया जाता है, जिसे सारा संसार देखेगा।

एक लाख चवालीस हजार की जागृति एकत्रित होने से आरम्भ होती है, और वह एकत्रीकरण परमेश्वर के वचन के द्वारा पूरा होता है, क्योंकि यहजेकेल की मरी हुई हड्डियाँ, जबकि वे अभी भी मृत ही हैं, परमेश्वर का वचन सुनकर इकट्ठी की जाती हैं। यहजेकेल उस मानवीय माध्यम का प्रतिनिधित्व करता है जो उस संदेश की घोषणा करता है जो हड्डियों को इकट्ठा करता है, जब प्रभु अपनी शेष प्रजा को इकट्ठा करने के लिए दूसरी बार अपना हाथ बढ़ाता है। यशायाह, यिर्मयाह, दानिय्येल, यूहन्ना और यहजेकेल सभी उस मानवीय तत्व को चिन्हित करते हैं जो मृत, सूखी हड्डियों तक ईश्वरीय संदेश पहुँचाता है।

जब हड्डियाँ इकट्ठी कर ली जाती हैं, तब प्रभु उस ज्ञान-वृद्धि को प्रकट करता है जो अनुग्रह-अवधि के समाप्त होने से ठीक पहले खोली जाती है, और उस ज्ञान का प्रतिनिधित्व “दानिय्येल की भविष्यद्वाणी का वह भाग जो अंतिम दिनों से संबंधित है” द्वारा किया गया है। यहजेकेल की दूसरी भविष्यद्वाणी में, जो ज्योति खोली जाती है वह तीसरी हाय है, जो पूर्वी पवन का वह संदेश है जो हड्डियों में जीवन का श्वास फूँकता है और कारणरूप से उन्हें एक प्रबल सेना के रूप में खड़ा कर देता है। दानिय्येल पर जो ज्योति प्रकट की जाती है, वह वह ज्योति है जिसका प्रतिनिधित्व ग्यारहवें अध्याय में उत्तर के राजा द्वारा किया गया है। यहजेकेल और दानिय्येल मिलकर “दानिय्येल की भविष्यद्वाणी का वह भाग जो अंतिम दिनों से संबंधित है” का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो (पूर्वी) पवन और (उत्तर) के राजा का समाचार है।

परन्तु पूरब और उत्तर से आने वाली खबरें उसे व्याकुल करेंगी; इसलिए वह बड़े क्रोध से निकल पड़ेगा, विनाश करने और बहुतों का सर्वनाश करने के लिए। दानिय्येल 11:44.

1856 में प्रभु ने अपनी प्रजा पर मुहर लगाने के अपने कार्य को समाप्त करने का उद्देश्य किया, परन्तु उन्होंने विद्रोह किया। वह सन्देश, जिसका उपयोग वह उन्हें उनकी लौदीकियाई दशा से बाहर निकालने के लिए करना चाहता था, लैव्यव्यवस्था 26 के “सात काल” थे। जब प्रभु ने जुलाई, 2023 में अपनी प्रजा को इकट्ठा करना आरम्भ किया, तब उसने उन्हें एक बार फिर “सात काल” का सन्देश प्रस्तुत किया, और अन्य बातों के साथ यह भी प्रकट किया कि प्रति-रूपात्मक प्रायश्चित्त के दिन पर जुबली का तुरही-नाद होना था, और वही समय था जब सातवाँ तुरही-नाद भी होना था। जुबली की तुरही “सात काल” का एक प्रतीक है, और सातवीं तुरही तीसरा हाय है। जब मीखाएल दानिय्येल अध्याय दस में उतरा, तब दानिय्येल उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता था जो लैव्यव्यवस्था 26 की प्रार्थना करने वालों का अनुभव प्राप्त करते हैं, और जो दानिय्येल अध्याय दो के भविष्यद्वाणीय रहस्य को समझने का प्रयत्न करते हैं।

दानिय्येल उन लोगों का प्रतीक है जिन्हें परमेश्वर की वाणी द्वारा एकत्र किया गया है, और जो तब पूर्व तथा उत्तर के संदेश की घोषणा करने के लिए सामर्थ्य पाकर अपने पैरों पर खड़े होते हैं। वे उस संदेश की घोषणा निकट आने वाली

रविवार-विधि तक करते हैं। उस सेना को खड़ा किए जाने की प्रक्रिया भविष्यद्वाणी का अत्यन्त विस्तृत विषय है, और वह बिंदु जब दिव्यता एक लाख चवालीस हजार की मुहरबंदी की पूर्ति में मानवता के साथ संयुक्त होने लगती है, उस इतिहास में आरम्भ हुआ जो दानिय्येल 11 के पद 11 में प्रस्तुत किया गया है। दानिय्येल 11 के पद 1 से पद 16 तक प्रस्तुत इतिहास, पद 40 के गुप्त इतिहास को पूर्ण करता है, अर्थात् “दानिय्येल की भविष्यद्वाणी का वह भाग जो अंतिम दिनों से संबंधित है।”

जब हम दानिय्येल 11 के तेरह से पंद्रह पदों पर विचार करना आरम्भ करते हैं, जिनकी पहली पूर्ति 200 ईसा पूर्व में पानियूम की लड़ाई में हुई थी, तब इन पदों के महत्व को समझना अत्यावश्यक है। पानियूम तीन प्रतिनिधि युद्धों में तीसरा है। पहला युद्ध 1989 में पोप-तंत्र और उसकी प्रतिनिधि सेना संयुक्त राज्य अमेरिका की विजय के साथ समाप्त हुआ। अगला युद्ध, जिसका प्रतिनिधित्व पद 11 और 12 करते हैं, और जिसकी पूर्ति राफिया की लड़ाई द्वारा हुई थी, उसमें दक्षिण का राजा (रूस) उत्तर के राजा और उसकी प्रतिनिधि सेना को यूक्रेन में पराजित करेगा। तीसरा युद्ध पहले के समान होगा, जिसमें पोप-तंत्र (उत्तर का राजा) अपनी प्रतिनिधि सेना (संयुक्त राज्य अमेरिका) के साथ साम्यवाद (संयुक्त राष्ट्र) पर प्रबल होगा। परन्तु तीसरा प्रतिनिधि युद्ध, जो पानियूम की लड़ाई है, तृतीय विश्वयुद्ध का भी आरम्भ करेगा।

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।

जैसे करूबों के पंखों के नीचे जो हाथ था, उसके मार्गदर्शन में चक्कों-जैसी जटिल व्यवस्थाएँ थीं, वैसे ही मानवीय घटनाओं का जटिल खेल भी दैवी नियंत्रण में है। राष्ट्रों के संघर्ष और कोलाहल के बीच, जो करूबों पर विराजमान है, वह अब भी पृथ्वी के मामलों का मार्गदर्शन करता है।

“राष्ट्रों का इतिहास, जिन्होंने एक के पश्चात् एक अपने लिए नियत समय और स्थान ग्रहण किया, और अनजाने में उस सत्य की गवाही दी जिसका अर्थ वे स्वयं नहीं जानते थे, हमसे बोलता है। आज प्रत्येक राष्ट्र और प्रत्येक व्यक्ति को परमेश्वर ने अपनी महान योजना में एक स्थान सौंपा है। आज मनुष्य और राष्ट्र उस परमेश्वर के हाथ की साहुल से नापे जा रहे हैं जो कोई भूल नहीं करता। सब अपने ही चुनाव के द्वारा अपनी नियति का निर्णय कर रहे हैं, और परमेश्वर अपनी अभिप्रेत योजनाओं की पूर्ति के लिए सब पर अपना नियंत्रण चला रहा है।”

“वह इतिहास जिसे महान् ‘मैं हूँ’ ने अपने वचन में अंकित किया है—भविष्यद्वाणी की शृंखला में कड़ी से कड़ी को जोड़ते हुए, अतीत की अनंतता से भविष्य की अनंतता तक—हमें बताता है कि युगों की अग्रसर होती धारा में आज हम कहाँ खड़े हैं, और आने वाले समय में क्या अपेक्षित किया जा सकता है। जो कुछ भविष्यद्वाणी ने, वर्तमान समय तक, घटित होने के विषय में पहले से कहा था, वह सब इतिहास के पृष्ठों पर अंकित पाया गया है; और हम निश्चित हो सकते हैं कि जो कुछ अभी आना शेष है, वह भी अपने नियत क्रम में पूरा होगा।”

सभी सांसारिक राजसत्ताओं के अंतिम पतन की स्पष्ट भविष्यवाणी सत्य के वचन में की गई है। जब इस्राएल के अंतिम राजा पर परमेश्वर का दंडादेश घोषित किया गया, तब कही गई भविष्यवाणी में यह संदेश दिया गया है:

'प्रभु परमेश्वर यों कहता है: शिरोभूषण हटा दो, और मुकुट उतार दो: ... जो नीचा है उसे ऊँचा करो, और जो ऊँचा है उसे नीचा करो। मैं इसे उलट दूँगा, उलट दूँगा, उलट दूँगा; और वह फिर न रहेगा, जब तक कि वह न आ जाए जिसका उस पर अधिकार है; और मैं उसे यह दे दूँगा।' यहजेकेल 21:26, 27.

“इस्राएल से हटाया गया मुकुट क्रमशः बाबुल, मादी-फ़ारस, यूनान, और रोम के राज्यों को सौंपा गया। परमेश्वर कहता है, ‘यह फिर न रहेगा, जब तक वह न आए जिसका उस पर अधिकार है; और मैं उसे वही दूँगा।’”

“वह समय निकट है। आज समय के चिन्ह यह घोषित कर रहे हैं कि हम महान और गंभीर घटनाओं की दहलीज़ पर खड़े हैं। हमारे संसार में सब कुछ आंदोलन और अशांति में है। हमारे नेत्रों के सामने उद्धारकर्ता की उन घटनाओं के विषय में की गई भविष्यवाणी पूरी हो रही है जो उसके आगमन से पहले घटित होने वाली थीं: ‘तुम लड़ाइयों और लड़ाइयों की अफवाहें सुनोगे.... जाति पर जाति, और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा; और विभिन्न

स्थानों में अकाल, महामारी, और भूकम्प होंगे।' मत्ती 24:6, 7।”

“वर्तमान समय सब जीवित मनुष्यों के लिए अत्यन्त गहन रुचि का समय है। शासक और राजनेता, विश्वास और अधिकार के पदों पर आसीन पुरुष, सभी वर्गों के विचारशील पुरुष और स्त्रियाँ—सबका ध्यान हमारे चारों ओर घटित होने वाली घटनाओं पर लगा हुआ है। वे राष्ट्रों के बीच विद्यमान तनावपूर्ण और चंचल संबंधों को देख रहे हैं। वे उस तीव्रता को देखते हैं जो पृथ्वी के प्रत्येक तत्व को अपने वश में करती जा रही है, और वे पहचानते हैं कि कुछ महान और निर्णायक होने ही वाला है—कि संसार एक अत्यन्त भीषण संकट की दहलीज़ पर खड़ा है।”

“स्वर्गदूत अब संघर्ष की वायुओं को रोके हुए हैं, ताकि वे तब तक न बहें जब तक संसार को उसके आने वाले विनाश के विषय में चेतावनी न दे दी जाए; परन्तु एक तूफ़ान उमड़ रहा है, जो पृथ्वी पर फूट पड़ने के लिए तैयार है; और जब परमेश्वर अपने स्वर्गदूतों को वायुओं को छोड़ देने की आज्ञा देगा, तब ऐसा संघर्ष का दृश्य उपस्थित होगा जिसका चित्रण कोई लेखनी नहीं कर सकती।

बाइबल, और केवल बाइबल, इन बातों के बारे में सही दृष्टि प्रदान करती है। यहाँ हमारे संसार के इतिहास के महान अंतिम दृश्य प्रकट किए गए हैं—ऐसी घटनाएँ जो पहले से ही अपनी परछाइयाँ आगे डाल रही हैं, जिनके निकट आने की आहट पृथ्वी को कंपा रही है और भय के कारण मनुष्यों के हृदय बैठते जा रहे हैं।

“देखो, प्रभु पृथ्वी को खाली कर देता है, और उसे उजाड़ देता है, और उसे उलट-पुलट कर देता है, और उसके निवासियों को चारों ओर बिखेर देता है.... उन्होंने व्यवस्थाओं का उल्लंघन किया है, विधान को बदल दिया है, अनन्त वाचा को तोड़ दिया है। इसलिए शाप ने पृथ्वी को ग्रस लिया है, और जो उसमें रहते हैं वे उजड़ गए हैं.... डफली का उल्लास थम जाता है, आनंद मनाने वालों का कोलाहल समाप्त हो जाता है, वीणा का आनंद थम जाता है।' यशायाह 24:1-18.

'हाय उस दिन के लिए! क्योंकि प्रभु का दिन निकट है, और वह सर्वशक्तिमान की ओर से आने वाले विनाश के समान आएगा.... बीज उनके ढेलों के नीचे सड़ गया है, कोठार उजाड़ पड़े हैं, खलिहान ढह गए हैं; क्योंकि अन्न सूख गया है। पशु कैसे कराहते हैं! गाय-बैलों के झुंड हैरान हैं, क्योंकि उनके पास चरागाह नहीं है; हाँ, भेड़ों के झुंड भी उजाड़ हो गए हैं।' 'दाखलता सूख गई है, और अंजीर का पेड़ मुरझा गया है; अनार का पेड़, खजूर का पेड़ भी, और सेब का पेड़, यहाँ तक कि खेत के सब पेड़, सूख गए हैं: क्योंकि मनुष्यों के पुत्रों में से आनंद मुरझा गया है।' योएल 1:15-18, 12.

'मेरे हृदय के भीतर तक मुझे पीड़ा हो रही है; ... मैं चुप नहीं रह सकता, क्योंकि हे मेरी आत्मा, तूने तुरही की ध्वनि और युद्ध की चेतावनी सुन ली है। विनाश पर विनाश की पुकार उठ रही है; क्योंकि सारा देश उजाड़ दिया गया है।'

'मैं ने पृथ्वी को देखा, और देखो, वह निराकार और शून्य थी; और आकाशों को देखा, और उनमें प्रकाश न था। मैं ने पहाड़ों को देखा, और देखो, वे कांप रहे थे, और सब पहाड़ियाँ हल्के-हल्के हिल रही थीं। मैं ने देखा, और देखो, वहाँ कोई मनुष्य न था, और आकाश के सब पक्षी उड़ गए थे। मैं ने देखा, और देखो, उपजाऊ स्थान उजाड़ बन गया था, और उसके सब नगर ढह गए थे।' यिर्मयाह 4:19, 20, 23-26.

'हाय! वह दिन बड़ा है, उसके समान कोई नहीं; यह तो याकूब के संकट का समय है; तौभी वह उस से उद्धार पाएगा।' यिर्मयाह 30:7." शिक्षा, 178-181.